वीतराग शासन जयवंत हो

श्री भक्तामर विधान

माण्डला

मध्य में - ॐ

प्रथम वलय - 8

द्वितीय वलय - 16

तृतीय वलय - 24

कुल - 48 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज

श्री आदिनाथ स्तोत्र

ऋषभ जिनेन्द्र शतेन्द्र सुपूजित, अतिशय कारी पुण्य जगाए।
आदि जिनेश सुरेश कहे, सुर इन्द्र विशद जयकार लगाए।।
धर्म प्रवर्तन आप किए, षट् कर्मों का सन्देश सुनाए।
आदि प्रभो! जय आदि प्रभो!, ग्रह शांति करें गुरु दोष नशाए।।1।।
पुण्य सुयोग से पूरव भव में, वज्रजंघ चक्री पद पाए।
ऋद्धि धनी मुनि को प्रभु जी, वन में अतिशय आहार कराए।।
वानर सूकर शेर नकुल यह, अनुमोदन कर हर्ष मनाए।
आदि प्रभो!.....।। 2।।
भोग भूमिज यह जीव बने सब, स्वर्ग लोक को आप सिधाए।
स्वर्गों के सुख भोग किए फिर, मर्त्य लोक में जन्म सुपाए।।
तीर्थेश बने वृषभेष सभी, पशु सुत बन के तिन गृह उपजाए।
आदि प्रभो!.....।। 3।।
चक्री से मुनिराज बने फिर, सोलह कारण भाव विचारे।
कल्पातीत अतीत रहा प्रभु, सर्वार्थ सिद्धी में भव धारे।।
तेंतीस सागर आप रहे फिर, चयकर अंतिम गर्भ में आए।
आदि प्रभो!.....।। 4।।
श्री गज बैल मृगेन्द्र रमा द्वय, माल दिवाकर चन्द्र प्रकाशी।
मीन कलश ह्रद सिन्धु सिंहासन, देव विमान फणीन्द्र निवासी।।

रत्न-राशि निर्धूम अग्नी शुभ, सोलह सपने मात को आए।
आदि प्रभो!.....।।5।।
नगर अयोध्या जन्म लिए तब, हस्ति सजा हँसते मुस्कराए।
चाले सनसन, नाचे छमाछम, गद्गद् हो मद छोड़ के आए।।
भव्य महा अभिषेक किए सुर, महिमा को जिसकी कह पाए।
आदि प्रभो!.....।।6।।
कंकण कुण्डल आदिक ले जिन, बालक को शचि ने पहराए।
इन्द्र स्वयं ही बालक बन प्रभु, के संग क्रीड़ा करने आए।।
युवराज बने, जिनराज महा, मण्डलेश्वर के पद को प्रभु पाए।
आदि प्रभो!.....।।7।।
यह संसार असार विचार, सुकेशलुंच कर संयम पाए।
भेद विज्ञान जगाए प्रभु! तब, छैः महिने का ध्यान लगाए।।
कर्म किए चउ घात विशद! फिर, पावन केवल ज्ञान जगाए।
आदि प्रभो!.....।।8।।
कर विहार दिग्देश देशान्तर, अष्टापद गिरि पे प्रभु आए।
योग निरोध किए चौदह दिन, कर्म अघाती आप नशाए।।
नित्य निरंजन ज्ञान शरीरी, सिद्ध शिला पे धाम बनाए।
आदि प्रभो!.....।।9।।

श्री भक्तामर विधान पूजा

स्थापना

दोहा - आदिनाथ की भक्ति का, है पावन सोपान।
भक्तामर स्तोत्र का, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं भक्तामर स्तोत्राराध्य श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर सवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितोभव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौपाई)

नीर क्षीर सा यहाँ चढ़ाएँ, भव रोगों से मुक्ती पाएँ।
भक्ती से भक्तामर ध्याएँ, आदिनाथ की महिमा गाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित गंध बनाकर लाए, भव संताप पूर्णक्षय जाए।
भक्ती से भक्तामर ध्याएँ, आदिनाथ की महिमा गाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत श्रेष्ठ धुवाकर लाए, अक्षय पद हमको मिल जाए।
भक्ती से भक्तामर ध्याएँ, आदिनाथ की महिमा गाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुगन्धित हम यह लाए, काम रोग हरने को आए।
भक्ती से भक्तामर ध्याएँ, आदिनाथ की महिमा गाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ नैवेद्य बनाकर लाए, क्षुधा नाश मेरी हो जाए।
भक्ती से भक्तामर ध्याएँ, आदिनाथ की महिमा गाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नमयी यह दीप जलाए, मोह महातम मम् क्षय जाए।
भक्ती से भक्तामर ध्याएँ, आदिनाथ की महिमा गाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप अग्नि में हम प्रजलाएँ, अष्टकर्म से मुक्ती पाएँ।
भक्ती से भक्तामर ध्याएँ, आदिनाथ की महिमा गाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस चढ़ाते हैं फल भाई, जो हैं महा मोक्ष फलदायी।
भक्ती से भक्तामर ध्याएँ, आदिनाथ की महिमा गाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य विशद हम यहाँ चढ़ाएँ, पद अनर्घ्य हम भी पा जाएँ।
भक्ती से भक्तामर ध्याएँ, आदिनाथ की महिमा गाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा - पुष्प सुगन्धीवान, चढ़ा रहे हम भाव से।
करते हैं गुणगान, मुक्ती पाने के लिए।।

शान्तये शांतिधारा...

सोरठा -चढ़ा रहे यह नीर, प्रासुक है जो श्रेष्ठतम।
मिट जाए भव पीर, काल अनादी जो विशद।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा - अर्चा करने हम यहाँ, आज हुए वाचाल।
भक्तामर स्तोत्र की, गाते हैं जयमाल।।

(नरेन्द्र छन्द)

आदि ब्रह्म आदीश्वर स्वामी, आदि सृष्टि के जो कर्ता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, मुक्ति वधू के जो भर्ता।।
नाभिराय सुत मरुदेवी के, भाग्य जगाए हे स्वामी!।
जन्म लिए प्रभु नगर अयोध्या, त्रिभुवन पति अन्तर्यामी।।1।।
धर्म प्रवर्तन करने वाले, हैं षट् कर्मों के दाता।
मोक्ष मार्ग के उपदेष्टा प्रभु, जन जन के तुम हो त्राता।।
महिमा का ना पार आपकी, सुर नर मुनि यह गाते हैं।
भव्य जीव प्रभु भक्ती का फल, अनायास ही पाते हैं।।2।।
मानतुंग मुनिवर को राजा, कारागृह में जब डाले।
भक्तामर के अतिशय से तब, टूटे अड़तालिस ताले।।
पाठ रचाकर भक्तामर का, मुनिवर जी जयवंत हुए।
भक्तों के भक्तामर पढ़के, रोग शोक दुख अंत हुए।।3।।
आदिनाथ स्तोत्र मूलतः, भक्तामर यह कहलाए।
मानतुंग मुनिवर भक्तीकर, आदिनाथ जिन को ध्याए।।
अक्षर प्रथम स्तोत्र में है यह, भक्तामर अतएव कहा।
भक्ती की महिमा दर्शायक, पावन यह स्तोत्र रहा।।4।।

दोहा - सुख शांती सौभाग्य हो, पढ़कर यह स्तोत्र।
मुक्ती पद का मूलतः, रहा विशद जो स्रोत।।

ॐ ह्रीं भक्तामर स्तोत्राराध्य श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि.स्वाहा।

दोहा - ऋषभदेव के भक्त बन, मानतुंग मुनिराज।
भक्तामर रचना किए, पूजें जिन पद आज।।

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

भक्तामर स्तोत्र - प्रत्येकार्घ्य

मूल रचयिता- आचार्य श्री मानतुंग जी

(पद्यानुवाद- आचार्य श्री विशदसागर जी)

दोहा

वृषभनाथ वृषभेष जिन, हो वृष के अवतार।
तारण तरण जहाज तव, करो 'विशद' भवपार।।

(इति मण्डलस्योपरिपुष्पांजलि क्षिपेत्)

(बसन्त तिलका छन्द)

भक्तामर-प्रणत मौलि-मणि-प्रभाणा-
मुद्योतकं-दलित-पाप-तमो वितानम्।
सम्यक्-प्रणम्य-जिन-पाद-युगं-युगादा-
वालम्बनं-भवजले-पततां-जनानाम्।।1।।

चौपाई

भक्त अमर नत मुकुट छवि देय,
गहन पाप तम को हर लेय।
भव सर पतित को शरण विशाल,
'विशद' नमन जिन पद नत भाल।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो जिणाणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

यः संस्तुतः सकल-वाङ् मय-तत्त्व-बोधा-
दुद्भूत-बुद्धि-पटुभिः सुर-लोक-नाथैः।
स्तोत्रैर् - जगत् - त्रितय - चित्त - हरै - रुदारैः
स्तोष्ये किलाह-मपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम्।।2।।

द्वादशांग ज्ञाता सुर देव, जिनवर की करते नित सेव।
शब्द अर्थ पद छन्द बनाय, थुति करता हूँ मैं सिरनाय।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो ओहि जिणाणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

बुद्ध्या विनाऽपि विबुधार्चित-पाद-पीठ,
स्तोतुं समुद्यत-मतिर्-विगत-त्रपोऽहम्।
बालं विहाय जल-संस्थित-मिन्दु-बिम्ब-
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम।।3।।

मंद बुद्धि हूँ अति अज्ञान, करता हूँ प्रभु का गुणगान।
जल में चन्द्र बिम्ब को पाय, बालक मन को ही ललचाय।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो परमोहि जिणाणं- ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

वक्तुं गुणान् गुण-समुद्र! शशांक-कान्तान्,
कस्ते क्षमः सुरगुरु-प्रतिमोऽपि बुद्ध्या।

कल्पान्त - काल - पवनोद्धत - नक्र - चक्रं
को वा तरीतु-मल-मम्बु-निधिं भुजाभ्याम्।।4।।

गुणसागर प्रभु गुण की खान, सुर गुरु न कर सके बखान।
क्षुब्ध जंतु युत प्रलय अपार, सागर तैर करे को पार।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

सोऽहं तथापि तव भक्ति-वशान्मुनीश,
कर्तुं स्तवं विगत-शक्ति-रपि प्रवृत्तः।
प्रीत्यात्म-वीर्य-मवि-चार्य मृगी मृगेन्द्रं
नाभ्येति किं निज-शिशोः परि-पाल-नार्थम्।।5।।

फिर भी 'विशद' भक्ति उर लाय,
शक्ति हीन थुति करूँ बनाय।
हिरण शक्ति क्या छोड़ न जाय,
मृगपति ढिग निज शिशु न बचाय।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो अणंतोहि जिणाणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

अल्पश्रुतं श्रुत-वतां परि-हास-धाम,
त्वद्-भक्ति-रेव मुखरी-कुरुते बलान्माम्।
यत्कोकिलः किल-मधौ मधुरं विरौति,
तच्चाम्र-चारु-कलिका-निक-रैक-हेतु।।6।।

मैं अल्पज्ञ हास्य का पात्र, भक्ति हेतु है पुलकित गात।
आम्रकली लख ऋतु बसंत, कोयल कुहुके कर पुलकंत।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो कोट्ठबुद्धीणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय झौं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

त्वत्संस्तवेन भव-सन्तति सन्निबद्धं,
पापं क्षणात्-क्षय-मुपैति शरीर-भाजाम्।
आक्रान्त-लोक-मलि-नील-मशेष-माशु,
सूर्यांशु-भिन्न-मिव शार्वर-मन्ध कारम्।।7।।

पाप कर्म होता निर्मूल, तव थुति जो करता अनुकूल।
सघन तिमिर ज्यों रवि को पाय, क्षण में शीघ्र नष्ट हो जाय।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो बीजबुद्धीणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मत्वेति नाथ! तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनु-धियापि तव प्रभावात्।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनी-दलेषु
मुक्ता-फल-द्युति-मुपैति ननूद-बिन्दुः।।8।।

थुति करता हूँ मैं मति मंद, मन हरता मन्त्रों का छंद।
कमल पत्र पर जल कण जाय, ज्यों मुक्ता की शोभा पाय।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो पदानुसारिणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

दोहा - आदिनाथ की अर्चना, करते मंगलकार।
भाव विशुद्धी के लिए, वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं अष्टदल कमलाधिपतये श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं नि.स्वाहा।

आस्तां तव स्तवन-मस्त-समस्त-दोषं,
त्वत्-संकथाऽपि जगतां दुरि-तानि हन्ति।
दूरे सहस्त्र-किरणः कुरुते प्रभैव,
पद्मा-करेषु जलजानि विकास-भांजि।।9।।

तव संस्तुति की कथा विशाल, नाम काटता कर्म कराल।
दिनकर रहे बहुत ही दूर, कमल खिलाता सर में पूर।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो संभिन्नसोदारणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

नात्यद्-भुतं भुवन-भूषण भूतनाथ!,
भूतैर्-गुणैर्-भुवि भवन्त-मभिष्टु-वन्तः।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,
भूत्या-श्रितं य इह नात्म समं करोति।।10।।

भवि थुतिकर तुम सम हो जाय, या में क्या अचरज कहलाय?
आश्रित करें न आप समान, ऐसे प्रभु का क्या सम्मान?।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो सयंबुद्धीणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

दृष्ट्वा भवन्त-मनि-मेष-विलोक-नीयम्,
नान्यत्र तोष-मुपयाति जनस्य चक्षुः।
पीत्त्वा पयः शशिकर-द्युति-दुग्ध-सिन्धोः
क्षारं जलं जल-निधे-रसितुं क इच्छेत्।।11।।

नयन आपके तन को देख, और नहीं फिर लगते नेक।
क्षीर नीर जो करता पान, क्षार नीर क्यों करे पुमान?।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो पत्तेय बुद्धीणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

यैः शान्त-राग-रुचिभिः परमाणु-भिस्त्वं,
निर्मापितस्-त्रिभुवनैक-ललामभूत!।
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्याम्,
यत्ते समान-मपरं न हि रूप-मस्ति।।12।।

प्रभु तुम शांत मनोहर रूप, परमाणू सम्पूर्ण अनूप।
तुम सा नहीं है जग में कोय, दर्शन की अभिलाषा होय।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो बोहिय बुद्धीणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

वक्त्रं क्व ते सुर-नरो-रग-नेत्र-हारि,
निःशेष-निर्जित-जगत्-त्रितयोप-मानम्।
बिम्बं कलंक-मलिनं क्व निशा-करस्य,
यद्-वासरे भवति पाण्डु-पलाश-कल्पम्।।13।।

तव अनुपम मुख है भगवान, निरुपम है अति शोभामान।
चन्द्रकांति दिन में छिप जाय, तव मुख शोभा निशदिन पाय।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो उजुमदीणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

सम्पूर्ण-मण्डल-शशांक-कला-कलाप,
शुभ्रा गुणास्-त्रिभुवनं तव लंघयन्ति।
ये संश्रितास्-त्रिजग-दीश्वर नाथ!-मेकम्,
कस्तान् निवार-यति संचरतो यथेष्टम्।।14।।

'विशद' गुणों के प्रभु भण्डार, तीन लोक को करते पार।
एक नाथ हो आश्रयवान, उन विचरण को रोके आन।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो विउलमदीणं' जिणाणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

चित्रं कि-मत्र यदि ते त्रिदशांग-नाभिर्
नीतं मना-गपि मनो न विकार-मार्गम्।
कल्पान्त-काल-मरुता चलिता-चलेन,
किं मन्द-राद्रि-शिखरं चलितं कदाचित्।।15।।

अचल चलावें प्रलय समीर, मेरु न हिलता हो अतिधीर।
सुर तिय न कर सके विकार, मन प्रभु का स्थिर अविकार।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो दसपुव्वीणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

निर्धूम - वर्ति - रप - वर्जित - तैल - पूरः
कृत्स्नं जगत्-त्रय-मिदं प्रकटी-करोषि।
गम्यो न जातु मरुतां चलिता-चलानाम्,
दीपोऽपरस्त्व-मसि नाथ! जगत्-प्रकाशः।।16।।

जले तेल बाती बिन श्वाँस, त्रिभुवन का प्रभु करें प्रकाश।
दीप धूप बिन जलता जाय, तूफाँ उसको बुझा न पाय।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो चउदसपुव्वीणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

नास्तं कदाचि-दुप-यासि न राहु-गम्यः
स्पष्टी-करोषि सहसा युगपज्जगन्ति।
नाम्भो - धरो - दर - निरुद्ध - महा - प्रभावः
सूर्यांति-शायि-महि-मासि मुनीन्द्र! लोके।।17।।

ग्रसे राहु न होते अस्त, प्रभु जी रवि से अधिक प्रशस्त।
मेघ ढकें न अती प्रकाश, ज्ञान भानु हो अद्भुत खास।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो अट्ठंग महाणिमित्त' कुसलाणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा/प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

नित्यो - दयं दलित - मोह - महान्ध - कारं,
गम्यं न राहु-वदनस्य न वारि-दानाम्।
विभ्राजते तव मुखाब्ज - मनल्प - कान्ति,
विद्यो-तयज्-जग-दपूर्व-शशांक-बिम्बम्।।18।।

उदित नित्य मुख जो तमहार, मेघ राहु से है विनिवार।
सौम्य मुखाम्बुज चन्द्र समान, लोक प्रकाशी कांति महान।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो विउव्व इड्ढिपत्ताणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

किं शर्वरीषु शशि-नाह्नि विवस्वता वा,
युष्मन्-मुखेन्दु-दलितेषु तमःसु नाथ!।
निष्पन्न-शालि-वन-शालिनि जीव-लोके,
कार्यं कियज्-जलधरैर्-जलभार-नम्रैः।।19।।

तमहर तव मुख चन्द्र महान, कहाँ करे निशदिन शशिभान।
खेत में ज्यों पक जाये धान, जलधर वर्षा है निष्काम।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो विज्जाहराणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृताव-काशं,
नैवं तथा हरि-हरादिषु नायकेषु।
तेजः महामणिषु याति यथा महत्त्वं,
नैवं तु काच-शकले किरणा-कुलेऽपि।।20।।

शोभे ज्ञान तुम्हारे पास, हरि हर में न उसका वास।
कांति महामणि में जो होय, कम्ब में होती क्या वह सोय?।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो चारणाणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मन्ये वरं हरि-हरादय एव दृष्टा
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोष-मेति।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन् मनो हरति नाथ! भवान्तरेऽपि।।21।।

देखे हरि हरादि कई देव, तुम से आज मिले जिनदेव!।
श्रद्धा हृदय जगी तव पाय, अन्य देव अब नहीं सुहाय।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो पण्ण समणाणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्व-दुपमं जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्त्र-रश्मिम्,
प्राच्येव दिग्-जनयति स्फुर-दंशु-जालम्।।22।।

शतनारी शत सुत उपजाय, तुम समान कोई न पाय।
रवि का पूरब में अवतार, तारागण के कई आधार।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो आगास गामीणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

त्वा-मा-मनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
मादित्य-वर्ण-ममलं तमसः पुरस्तात्।
त्वा-मेव सम्य-गुप-लभ्य जयन्ति मृत्युम्,
नान्यः शिवः शिव-पदस्य मुनीन्द्र! पन्थाः।।23।।

तुमको परम पुरुष मुनि माने, तमहर अमल सूर्यसम जाने।
मृत्युंजय हो प्रभु को पाय, शरण छोड़ जन जगत भ्रमाय।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो आसीविसाणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

त्वा-मव्ययं विभु-मचिन्त्य-मसंख्य-माद्यं,
ब्रह्माणमीश्वर - मनन्त - मनंग - केतुम्।
योगीश्वरं विदित - योग - मनेक - मेकं
ज्ञान-स्वरूप-ममलं प्रवदन्ति सन्तः।।24।।

भोगाव्यय असंख्य विभु ईश्वर, अचिन्त्य आद्य ब्रह्मा योगीश्वर।
अनेक ज्ञानमय अमल अनंत, कामकेतु इक कहते संत।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो दिट्ठि विसाणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

आदिम तीर्थंकर हुए, आदिनाथ जिननाथ।
करके जिनकी अर्चना, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं षोड्स दल कमलाधिपतये श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बुद्धस्त्व-मेव विबुधार्चित-बुद्धि-बोधात्,
त्वं शंकरोऽसि भुवन-त्रय-शंकरत्वात्।
धातासि धीर! शिव-मार्ग-विधेर्-विधानाद्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन्! पुरुषोत्तमोऽसि।।25।।

बुध विबुधार्चित बुद्ध महान, शंकर सुखकारी भगवान।
ब्रह्मा शिवपथ दाता नाथ!, सर्वश्रेष्ठ पुरुषोत्तम साथ।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो उग्गतवाणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

तुभ्यं नमस्-त्रिभुव-नार्ति-हराय नाथ!,
तुभ्यं नमः क्षिति-तलामल-भूषणाय!।
तुभ्यं नमस्-त्रिजगतः परमेश्वराय!,
तुभ्यं नमो जिन! भवोदधि-शोषणाय।।26।।

त्रिभुवन दुखहर तुम्हें प्रणाम! भूतल भूषण तुम्हें प्रणाम!।
त्रिभुवन स्वामी तुम्हें प्रणाम! भवसर शोषक तुम्हें प्रणाम!।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो दित्त तवाणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणै-रशेषैस्,
त्वं संश्रितो निरवकाश-तया मुनीश!।
दोषै - रुपात्त - विविधाश्रय - जात - गर्वैः,
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचि-दपी-क्षितोऽसि।।27।।

शरण में आये सब गुण आन, विस्मय क्या कोइ मिला न थान?
मुख न देखें स्वप्न में दोष, सारे जग में प्रभु निर्दोष।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो तत्त तवाणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

उच्चै - रशोक - तरु - संश्रित - मुन्मयूख
माभाति रूप - ममलं भवतो नितान्तम्।
स्पष्टोल्लसत्-किरण-मस्त-तमो-वितानं,
बिम्बं रवे-रिव पयोधर-पार्श्व-वर्ति।।28।।

तरु अशोक तल में भगवान, उज्ज्वल तन अति शोभामान।
मेघ निकट दिनकर के होय, उस भांती दिखते प्रभु सोय।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो महातवाणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

सिंहासने मणि-मयूख-शिखा-विचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनका-वदातम्।
बिम्बं वियद्-विलस-दंशु-लता-वितानम्,
तुंगो-दयाद्रि-शिर-सीव सहस्र-रश्मेः।।29।।

मणिमय सिंहासन पर देव, तव तन शोभे स्वर्णिम एव।
रवि का उदयाचल पर रूप, उदित सूर्य सम दिखे स्वरूप।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो घोर तवाणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

कुन्दा - वदात - चल - चामर - चारु - शोभम्,
विभ्राजते तव वपुः कल-धौत-कान्तम्।
उद्यच्छशांक - शुचि - निर्झर - वारिधार
मुच्चैस्तटं-सुरगिरे-रिव शात-कौम्भम्।।30।।

ढुरते चामर शुक्ल विशेष, स्वर्णिम शोभित है तव भेष।
ज्यों मेरू पर बहती धार, स्वर्णमयी पर्वत मनहार।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो घोर गुणाणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

छत्र-त्रयं तव विभाति शशांक-कान्त-
मुच्चैः स्थितं स्थगित-भानुकर-प्रतापम्।
मुक्ताफल-प्रकर-जाल-विवृद्ध-शोभम्,
प्रख्या-पयत् त्रिजगतः परमेश्वरत्वम्।।31।।

तीन छत्र तिय लोक समान, मणिमय शशि सम शोभावान।
सूर्य ताप का करे विनाश, श्री जिन के गुण करें प्रकाश।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो घोर परक्कमाणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

गम्भीर - तार - रव - पूरित - दिग्विभागस्
त्रैलोक्य-लोक-शुभ-संगम-भूति-दक्षः।
सद्-धर्मराज-जय-घोषण-घोषकः सन्,
खे दुन्दुभिर्-ध्वनति ते यशसः प्रवादी।।32।।

दश दिशि ध्वनि गूँजें गम्भीर, जय घोषक जिनवर की धीर।
तीन लोक में अति सुखदाय, सुयश दुन्दुभि बाजा गाय।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो घोरगुण बंभयारीणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मन्दार - सुन्दर - नमेरु - सुपारि - जात
सन्तान-कादि-कुसुमोत्कर-वृष्टि-रुद्धा।
गन्धोद-बिन्दु-शुभ-मन्द-मरुत्-प्रपाता,
दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर्वा।।33।।

मंद मरुत गंधोदक सार, सुरगुरु सुमन अनेक प्रकार।
दिव्य वचन श्री मुख से खिरें, पुष्प वृष्टि नभ से ज्यों झरें।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो आमोसहि पत्ताणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

शुम्भत्-प्रभा-वलय-भूरि-विभा-विभोस्ते,
लोक-त्रये द्युतिमतां द्युति-मा-क्षिपन्ती।
प्रोद्यद् - दिवाकर - निरन्तर - भूरि - संख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशा-मपि सोम-सौम्याम्।।34।।

त्रिजग कांति फीकी पड़ जाय, भामण्डल की शोभा पाय।
चन्द्र कांति सम शीतल होय, सारे जग का आतप खोय।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो खेल्लोसहि पत्ताणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

स्वर्गा - पवर्ग - गम - मार्ग - विमार्गणेष्टः,
सद्धर्म - तत्त्व - कथनैक - पटुस् - त्रिलोक्याः।
दिव्यध्वनिर् - भवति ते विशदार्थ-सर्व-
भाषा-स्वभाव-परिणाम-गुणैः प्रयोज्यः।।35।।

स्वर्ग मोक्ष की राह दिखाय, द्रव्य तत्त्व गुण को प्रगटाय।
दिव्य ध्वनि है 'विशद' अनूप, ॐकार सब भाषा रूप।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो जल्लोसहि पत्ताणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

उन्निद्र - हेमनव - पंकज - पुंज - कान्ति,
पर्युल् - लसन् - नख - मयूख शिखाभि -रामौ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र! धत्तः,
पद्मानि तत्र विबुधाः परि - कल्प - यन्ति।।36।।

भवि जीवों का हो उपकार, प्रभु इच्छा बिन करें विहार।
जहँ जहँ प्रभु के पग पड़-पड़ जायँ, तहँ तहँ पंकज देव रचायँ।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो विप्पोसहि पत्ताणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

इत्थं यथा तव विभूति-रभूज्-जिनेन्द्र!
धर्मोप-देशन-विधौ न तथा परस्य।
यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
तादृक् कुतो ग्रह-गणस्य विकासिनोऽपि।।37।।

धर्म कथन में आप समान, अन्य देव न पाते आन।
तारा रवि की द्युति क्या पाय? वैभव देव न अन्य लहाय।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो सव्वोसहि पत्ताणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

श्च्योतन् - मदाविल - विलोल - कपोल - मूल-
मत्त - भ्रमद् - भ्रमर - नादविवृद्ध - कोपम्।
ऐरा - वताभ - मिभ - मुद्धत - मा - पतन्तं
दृष्ट्वा भयं भवति नो भव-दाश्रितानाम्।।38।।

गण्डस्थल मद जल से सने, गीत गूँजते अतिशय घने।
मत्त कुपित होकर गज आय, फिर भी भक्त नहीं भय खाय।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो मणबलीणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

भिन्नेभ - कुम्भ - गल - दुज्ज्वल - शोणिताक्त,
मुक्ताफल - प्रकर - भूषित - भूमिभागः।
बद्ध - क्रम क्रम - गतं हरिणा - धिपोऽपि,
नाक्रामति क्रम - युगा - चल - संश्रितं ते।।39।।

भिदें कुम्भ गज मुक्ता द्वारा, हो भूषित भू भाग ही सारा।
तव भक्तों का केहरि आन, न कर सके जरा भी हान।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो वचिबलीणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-वह्नि-कल्पम्,
दावानलं ज्वलित-मुज्ज्वल-मुत्स्फुलिंगम्।
विश्वं जिघत्सु-मिव सम्मुख-मापतन्तं,
त्वन्नाम-कीर्तन-जलं शमयत्यशेषम्।।40।।

प्रलय पवन अग्नी घन-घोर, उठें तिलंगे चारों ओर।
जग भक्षण हेतू आक्रान्त, नाम रूप जल से हो शांत।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो कायबलीणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

रक्तेक्षणं समद-कोकिल-कण्ठ-नीलं,
क्रोधोद्धतं फणिन-मुत्फण-मा-पतन्तम्।
आक्रामति क्रमयुगेण निरस्त-शंकस्-
त्वन्नाम-नाग-दमनी-ह्रदि यस्य पुंसः।।41।।

काला नाग कुपित हो जाय, तो भी निर्भयता को पाय।
हाथ में नाग दमन ज्यों पाय, भक्त आपका बढ़ता जाय।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो खीर सवीणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

वल्गत्तुरंग - गज - गर्जित - भीमनाद-
माजौ बलं बलवता-मपि भूपतीनाम्।
उद्यद्-दिवाकर-मयूख-शिखा-पविद्धं,
त्वत्-कीर्तनात्तम इवाशु भिदा-मुपैति।।42।।

हय गय भयकारी रव होय, शक्तीशाली नृप दल सोय।
नाश होय कर प्रभु यशगान, रवि ज्यों करे तिमिर की हान।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो सप्पिसवीणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

कुन्ताग्र-भिन्न-गज-शोणित-वारि-वाह-
वेगा - वतार - तरणा - तुर - योध - भीमे।
युद्धे जयं विजित-दुर्जय-जेय-पक्षास्-
त्वत्पाद-पंकज-वना-श्रयिणो लभन्ते।।43।।

भाला गज के सिर लग जाय, सिर से रक्त की धार बहाय।
रण में दास विजय तव पाय, दुर्जय शत्रु भी आ जाय।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो महुरसवीणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

अम्भो-निधौ क्षुभित-भीषण-नक्र-चक्र-
पाठीन-पीठ-भय-दोल्वण-वाड-वाग्नौ।
रंग-तरंग-शिखर-स्थित-यान-पात्रास्-
त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति।।44।।

क्षुब्ध जलधि बड़वानल होय, मकरादिक भयकारी सोय।
करें आपका जो भी ध्यान, पार करें निर्भय हो थान।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो अमिय सवीणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

उद्भूत - भीषण - जलोदर - भार - भुग्नाः,
शोच्यां दशा-मुप-गताश्च्युत-जीवि-ताशाः।
त्वत् - पाद - पंकज - रजोऽमृत - दिग्ध - देहा,
मर्त्या भवन्ति मकरध्वज-तुल्य-रूपाः।।45।।

रोग जलोदर होवे खास, चिन्तित दशा तजी हो आस।
अमृत प्रभु पद रज सिर नाय, मदन रूपता को वह पाय।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो अक्खीण महाणसाणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

आपादकण्ठ - मुरु - श्रृंखल - वेष्टितांगा,
गाढ़ं बृहन्-निगड-कोटि-निघृष्ट-जंघाः।
त्वन्-नाम-मन्त्र-मनिशं मनुजाः स्मरन्तः,
सद्यः स्वयं विगत-बन्ध-भया भवन्ति।।46।।

सांकल से हो बद्ध शरीर, खून से लथपत होवे पीर।
नाम मंत्र तव जपते लोग, शीघ्र बंध का होय वियोग।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो वड्ढमाणाणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मत्त - द्विपेन्द्र - मृगराज - दवान - लाहि-
संग्राम - वारिधि - महोदर - बन्धनोत्थम्।
तस्याशु नाश - मुपयाति भयं भियेव,
यस्तावकं स्तव-मिमं मतिमा-नधीते।।47।।

गज अहि दव रण बंधन रोग, मृग भय सिंधू का संयोग।
सारे भय भी हों भयभीत, थुति प्रभु की जो करें विनीत।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो सिद्धायदणाणं' वड्ढमाणाणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

स्तोत्र-स्रजं तव जिनेन्द्र! गुणैर् निबद्धां,
भक्त्या मया विविध-वर्ण-विचित्र-पुष्पाम्।
धत्ते जनो य इह कण्ठ - गता - मजस्रं,
तं ''मानतुंग''-मवशा समुपैति लक्ष्मी: ।।48।।

विविध पुष्प जिनगुण की माल, प्रभु की संस्तुति रची विशाल।
कंठ में धारण जो कर लेय, मानतुंग सम लक्ष्मी सेय।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं ''णमो भयवदो महदि महावीर वड्ढमाण बुद्धरिसिणो'' नमो लोए सव्वसाहूणं ऋद्धि सहित श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

दोहा - मानतुंग की कृती का, भाषामय अनुवाद।
'विशद' शांति आनन्द का, भोग करें कर याद।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति दल कमलाधिपतये श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नम: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य - ॐ ह्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ तीर्थंकराय नम:।

जयमाला

दोहा - भक्ती कर जग जीव सब, होते विशद निहाल।
भक्तामर से भक्तिकर, गाते हैं जयमाल।।

(शम्भू छन्द)

जय जयति जयो जय तीर्थंकर, जय जयति जयो जय ज्ञान धनी।
जय जयति जयो जय ऋषभदेव, जय जयति जयो जय सर्व गुणी।।

जय जयति जयो जय भक्तामर, जय जयति जयो जय मुनि ज्ञानी।
जय जयति जयो जय जैन धर्म, जय जयति जयो जय जिनवाणी।।1।।
राजा मुनिवर जी मानतुंग, को कारागृह में डाले थे।
तब भक्तामर की भक्ती से, वे टूट गये सब ताले थे।।
राजा ने मुनिवर मानतुंग, जिनधर्म का जय जयकार किया।
चरणों में गिरकर के मुनि का, राजा ने आशीर्वाद लिया।।2।।
जो भव बन्धन हरने वाले, उनको बन्धन में डाल दिया।
पर कारागृह में रहकर भी, गुरुवर ने विशद कमाल किया।।
मुनि मानतुंग से क्षमा मांग, जिन मत सबने स्वीकार किया।
मुनिवर ने क्षमादान दे कर, भक्तामर का उपहार दिया।।3।।
प्रभु आदिनाथ की अनुकम्पा, श्री मानतुंग मुनिवर पाए।
हे आदिनाथ! हे महा श्रमण!, अनुकम्पा हम पाने आए।।
हे जग उद्धारक तीर्थंकर!, मुझको भी भव से पार करो।
दे करके करुणा दान विशद, हम भक्तों का उद्धार करो।।4।।

दोहा - भक्तामर के सृजक हैं, मानतुंग ऋषिराज।
जिन गुरु की अर्चा विशद, करते हैं हम आज।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त सर्व लोकोत्तम जगत शरण श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - शांति रूप जिनवर परम, शांती के दातार।
पुष्पांजलि करते चरण, हे जिनेन्द्र! दुखहार।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

भक्तामर स्तोत्र के 48 ऋद्धि मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं झौं झौं नमः।
2. ॐ ह्रीं अर्हं णमोओहिजिणाणं झौं झौं नमः।
3. ॐ ह्रीं अर्हं णमोपरमोहिजिणाणं झौं झौं नमः।
4. ॐ ह्रीं अर्हं णमोसव्वोहिजिणाणं झौं झौं नमः।
5. ॐ ह्रीं अर्हं णमोअणंतोहिजिणाणं झौं झौं नमः।
6. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठ बुद्धीणं झौं झौं नमः।
7. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीजबुद्धीणं झौं झौं नमः।
8. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पादाणुसारीणं झौं झौं नमः।
9. ॐ ह्रीं अर्हं णमोसंभिण्णसोदारणं झौं झौं नमः।
10. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंबुद्धीणं झौं झौं नमः।
11. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेय बुद्धाणं झौं झौं नमः।
12. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहिय बुद्धाणं झौं झौं नमः।
13. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं झौं झौं नमः।
14. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउल मदीणं झौं झौं नमः।
15. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दस पुव्वीणं झौं झौं नमः।
16. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदस पुव्वीणं झौं झौं नमः।
17. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंगमहा णिमित कुसलाणं झौं झौं नमः।

18. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वइड्ढि पत्ताणं झौं झौं नमः।
19. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं झौं झौं नमः।
20. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं झौं झौं नमः।
21. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्ण समणाणं झौं झौं नमः।
22. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगास गामीणं झौं झौं नमः।
23. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं झौं झौं नमः।
24. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं झौं झौं नमः।
25. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्ग तवाणं झौं झौं नमः।
26. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्त तवाणं झौं झौं नमः।
27. ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्तं तवाणं झौं झौं नमः।
28. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महा तवाणं झौं झौं नमः।
29. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर तवाणं झौं झौं नमः।
30. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणाणं झौं झौं नमः।
31. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर परक्कमाणं झौं झौं नमः।
32. ॐ ह्रीं अर्हं णमोघोरगुणबंभयारीणं झौं झौं नमः।
33. ॐ ह्रीं अर्हं णमोआमोसहिपत्ताणं झौं झौं नमः।
34. ॐ ह्रीं अर्हं णमोखेल्लोसहिपत्ताणं झौं झौं नमः।
35. ॐ ह्रीं अर्हं णमोजल्लोसहिपत्ताणं झौं झौं नमः।

36. ॐ ह्रीं अर्हं णमोविप्पोसहिपत्ताणं झौं झौं नमः।

37. ॐ ह्रीं अर्हं णमोसव्वोसहिपत्ताणं झौं झौं नमः।

38. ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं झौं झौं नमः।

39. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचिबलीणं झौं झौं नमः।

40. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं झौं झौं नमः।

41. ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं झौं झौं नमः।

42. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीणं झौं झौं नमः।

43. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुरसवीणं झौं झौं नमः।

44. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियसवीणं झौं झौं नमः।

45. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहाणसाणं झौं झौं नमः।

46. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं झौं झौं नमः।

47. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धायदणाणं झौं झौं नमः।

48. ॐ ह्रीं अर्हं णमो भयवदो-महदि-महावीर वड्ढमाण-बुद्ध-रिसीणो (चेदि) झौं झौं नमः।

जाप्य :

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं अर्हं श्री वृषभनाथ तीर्थंकराय नमः।

श्री भक्तामर अड़तालीसा

दोहा - भक्तामर स्तोत्र यह, आदिनाथ के नाम।
मानतुंग मुनि ने लिखा, करके चरण प्रणाम।।
सुख शांती सौभाग्य हो, पढ़ने से स्तोत्र।
बाधाएँ सब दूर हों, बहे धर्म का स्रोत।।

चौपाई

भक्तामर स्तोत्र निराला, सब कष्टों को हरने वाला।। 1।।
आदिनाथ को मन से ध्याए, सच्चे मन से ध्यान लगाए।। 2।।
भक्ती के रस में खो जाए, पढ़ने वाला पुण्य कमाए।। 3।।
मानतुंग की रचना प्यारी, कहलाए जो संकटहारी।। 4।।
पढ़े पढ़ाये पाठ कराये, प्राणी पुण्यवान हो जाए।। 5।।
ग्रह क्लेश सारा नश जाए, मन में अनुपम शांती पाए।। 6।।
हरेक काव्य है महिमाशाली, भक्ती कभी न जाए खाली।।7।।
एक एक अक्षर मंत्र कहाये, पाठक सुख सम्पत्ती पाए।। 8।।
सदी ग्यारहवी जानो भाई, उज्जैनी नगरी सुखदायी।। 9।।
जिसका प्रान्त मालवा गाया, विद्वानों का केन्द्र बताया।। 10।।
राजा भोज वहाँ का जानो, नौ मंत्री जिसके पहिचानो।। 11।।
कालीदास प्रथम कहलाया, सेठ सुदत्त वहाँ जब आया।। 12।।
पुत्र मनोहर जिसका जानो, पुस्तक हाथ लिए था मानो।। 13।।
राजा ने पूछा हे भाई!, पुस्तक कौन सी तुमने पाई।। 14।।

नाम माला तब नाम बताए, लेखक कवि धनंजय गाए।। 15।।
कवि को राजा ने बुलवाया, खुश होके सम्मान कराया।। 16।।
कृति नाम माला है प्यारी, राजा किए प्रशंसा भारी।। 17।।
गुरु के आशिष से यह पाया, मानतुंग को गुरु बतलाया।। 18।।
कालीदास को नहीं सुहाया, मुनिवर को मूरख बतलाया।। 19।।
शास्त्रार्थ कर ले तो जानें, हम इसकी महिमा पहिचानें।। 20।।
दूत सुमुनि के पास भिजाया, मुनिवर को संदेश सुनाया।। 21।।
सभा बीच मुनिवर न आए, चार बार संदेश भिजाए।। 22।।
कालिदास को गुस्सा आया, उसने राजा को भड़काया।। 23।।
क्रोध नृपति के मन में आया, सैनिक को आदेश सुनाया।। 24।।
बन्दी बना यहाँ पर लाओ, राजसभा में पेश कराओ।।25।।
दूत उठाकर मुनि को लाए, मुनि उपसर्ग मानकर आए।।26।।
मौन धार लीन्हे तब स्वामी, जैन धर्म के शुभ अनुगामी।।27।।
मुनिवर को वह कैद कराए, अड़तालिस ताले लगवाए।।28।।
नर नारी तब शोक मनाए, दुख के आँसू खूब बहाए।।29।।
मुनिवर मन में समता लाए, तीन दिनों का समय बिताए।।30।।
आदिनाथ को मुनिवर ध्याये, भक्तामर स्तोत्र रचाये।।31।।
मुनि के तन में बंधनें वाले, टूट गयीं जंजीरें ताले।।32।।
आपों आप खुले सब द्वारे, द्वारपाल सब लगा के हारे।।33।।
पास में राजा के वह आए, जाकर सारा हाल सुनाए।।34।।

राजा तभी वहाँ पर आया, मुनिवर को फिर कैद कराया।।35।।
मुनिवर जी फिर ध्यान लगाए, ताले फिर से टूटे पाए।।36।।
राजा तब मन में घबराया, कालिदास को पास बुलाया।।37।।
कालिदास ने शक्ति लगाई, देवी कालिका भी प्रगटाई।।38।।
देवी चक्रेश्वरी तब आई, देख कालिका तब घबराई।।39।।
महिमा जैन धर्म की गाई, सबने तब जयकार लगाई।।40।।
जैन धर्म लोगों ने धारा, धर्म का है बस यही सहारा।।41।।
'विशद' भक्ति की है बलिहारी, पुण्यवान होवे शुभकारी।।42।।
भाव सहित भक्तामर गाएँ, मानतुंग सम भक्ति जगाएँ।।43।।
अतिशयकारी पुण्य कमाएँ, अनुक्रम से फिर मुक्ती पाएँ।।44।।
भक्तामर है महिमा शाली, भक्ती भक्त की जाय ना खाली।।45।।
कोई पूजन पाठ रचाते, अखण्ड पाठ करते करवाते।।46।।
कोई विधान करके हर्षाते, कोई प्रभु की महिमा गाते।।47।।
हम भी श्री जिनवर को ध्याएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।48।।

दोहा - भक्तामर स्तोत्र से, भारी अतिशय होय।
नाना भाषा में रचा, पढ़े भाव से कोय।।
आधि व्याधि नाशक कहा, पावन शुभ स्तोत्र।
मंत्रों से परिपूर्ण है, 'विशद' धर्म का स्रोत।।

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ऐम् अर्हं श्री वृषभनाथ तीर्थंकराय नमः।

आरती भक्तामर की

तर्ज – माई रे माई मुंडेर....

गाएँ जी गाएँ भक्तामर की, आरती मंगल गाएँ।
घृत के दीप जलाकर प्रभु के, चरणों शीश झुकाएँ।।
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्।। टेक।।
कृत युग के आदी में प्रभु जी, स्वर्ग से चयकर आए।।
नाभिराय अरु मरुदेवी का, जीवन धन्य बनाए।
नगर अयोध्या जन्म लिए प्रभु, नर नारी हर्षाए।।
घृत के दीप जलाकर प्रभु के, चरणों शीश झुकाएँ।
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्।।1।।
असि मसि कृषि वाणिज्य कला अरु, शिल्प का ज्ञान सिखाए।
नील परी की मृत्यू लखकर, प्रभु वैराग्य जगाए।।
विशद ज्ञान को पाए प्रभु जी, घाती कर्म नशाए।
घृत के दीप जलाकर प्रभु के, चरणों शीश झुकाएँ।।
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्।।2।।
मानतुंग स्वामी के ऊपर, उपसर्ग भोज ने ढाया।
अड़तालिस तालों के अन्दर, मुनि को कैद कराया।।
टूट गईं जंजीरें ताले, आदि प्रभु को ध्याए।
घृत के दीप जलाकर प्रभु के, चरणों शीश झुकाएँ।।
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्।।3।।
अतिशय देखा भोजराज ने, मुनि को शीश झुकाया।
जैन धर्म के जयकारों से, सारा गगन गुंजाया।।

आदिनाथ प्रभु का आराधन, भव से मुक्ति दिलाए।
घृत के दीप जलाकर प्रभु के, चरणों शीश झुकाएँ।।
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्।।4।।
कोड़ा-कोड़ी वर्ष बाद भी, प्राणी तुमको ध्याते।
आदिनाथ जिन भक्तामर को, सादर शीश झुकाते।।
''विशद'' भक्ति की महिमा को यह, सारा ही जग गाए।
घृत के दीप जलाकर प्रभु के, चरणों शीश झुकाएँ।।
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्।।5।।

श्री मानतुंग स्वामी का अर्घ्य

आदिनाथ की अर्चा पावन, भक्तामर में रही महान।
कैद कराए मुनि को राजा, अड़तालिस तालो में जान।।
भक्तामर स्तोत्र रचे मुनि, ऋद्धि सिद्धिकर अतिशयवान।
जिन मुनि के पद अर्घ्य चढ़ाते, विशद भाव से महति महान।।

ॐ ह्रीं भक्तामर स्तोत्र रचयिता श्री मानतुंगाचार्य नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

विधान रचयिता श्री विशद सागराचार्य जी का अर्घ्य

भक्तामर स्तोत्र की रचना, मानतुंगाचार्य जी किए महान।
ऋषभदेव की अर्चा करके, भक्त सभी करते गुणगान।।
भक्तामर विधान की रचना, विशदाचार्य जी किए विशाल।
पूजा अर्चा दीपार्चन कर, भक्त सभी हों मालामाल।।

ॐ ह्रीं भक्तामर विधान रचयिता आचार्य गुरुवरश्रीविशदसागर यतिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।